



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एन.: 2582-9882

## टिकाऊ खेती में पशुधन कल्याण की भूमिका

(डॉ. अवधेश कुमार सिंह, महेन्द्र प्रताप सिंह एवं आशुतोष श्रीवास्तव)

कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश – 229408

संवादी लेखक का ईमेल पता: [awadheshndri@gmail.com](mailto:awadheshndri@gmail.com)

भारत विश्व में दुग्ध उत्पादन (230.58 मिलियन टन, 2022-23) के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर होने के साथ साथ पशुओं की संख्या में भी आगे है। यहाँ पर पशु पालन किसानों की आय का प्रमुख साधन है क्योंकि कृषि एवं पशुपालन एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। विगत वर्षों में इस व्यवसाय का उद्देश्य जीविकोपार्जन से परिवर्तित होकर आय के बिंदु पर पहुंचना यह प्रदर्शित करता है कि लोग पशुओं की देखरेख में कोई कसर नहीं छोड़ते, उनके स्वास्थ्य एवं देखरेख सम्बन्धी प्रथाओं का अनुपालन करते हैं। लेकिन क्या पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल एवं अन्य प्रथाओं मात्र से पशु कल्याण के पहलुओं का समावेश सुनिश्चित कर पाना संभव है या पशु कल्याण प्रथाओं को अंगीकार करना अधिक महत्वपूर्ण है या इन प्रथाओं को दस्तावेजों से निकालकर धरातल पर उतारना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

कृषि में पशु कल्याण न केवल नैतिक दृष्टिकोण से, बल्कि हमारी खाद्य प्रणालियों की समग्र स्थिरता और गुणवत्ता के लिए भी आवश्यक है। पशु कल्याण को प्राथमिकता देकर, हम स्वस्थ और खुशहाल पशुओं को बढ़ावा देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। जिन पशुओं को पर्याप्त रहने की व्यवस्था, उचित पोषण और पशु चिकित्सा देखभाल प्रदान की जाती है, उनमें बीमारी और तनाव का खतरा कम होता है, जिसके परिणामस्वरूप वो बेहतर उत्पादन देते हैं। इसके अलावा, पशु कल्याण का पर्यावरणीय स्थिरता से गहरा संबंध है। सतत कृषि का लक्ष्य पर्यावरण पर कृषि पद्धतियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करना है, जिसमें संसाधनों का प्रभावी उपयोग और प्रदूषण में कमी शामिल है। चारागाह-आधारित प्रणालियों और जैविक खेती जैसी पशु कल्याण प्रथाओं को लागू करके, हम अधिक टिकाऊ और पुनर्योजी कृषि प्रणाली में योगदान कर सकते हैं।

उपभोक्ता मांग और बाजार ताकतें भी पशु कल्याण प्रथाओं में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जैसे-जैसे उपभोक्ता पशु कल्याण के मुद्दों के बारे में अधिक सूचित और जागरूक हो जाते हैं, वे पशु कल्याण को प्राथमिकता देने वाले किसानों का समर्थन करके अधिक नैतिक विकल्प चुन सकते हैं। लेबल और प्रमाणपत्र, जैसे "प्रमाणित मानवीय" और "पशु कल्याण स्वीकृत", उपभोक्ताओं को भोजन के उत्पादन में जानवरों के उपचार के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी में प्रगति ने पशु कल्याण सुधार में भी योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, सटीक खेती प्रौद्योगिकियाँ पशु स्वास्थ्य की बेहतर निगरानी की अनुमति देती हैं, जिससे बीमारियों या अन्य कल्याणकारी मुद्दों का शीघ्र पता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पशु आवास में नवाचार, जैसे समृद्ध वातावरण और स्वचालित भोजन प्रणाली ने जानवरों को अधिक आराम और कल्याण प्रदान किया है। कृषि में पशु कल्याण नैतिक और टिकाऊ कृषि पद्धतियों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जानवरों की भलाई को प्राथमिकता देकर, हम अधिक

दयालु और प्रभावी कृषि प्रणाली को बढ़ावा देते हुए सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता वाले भोजन का उत्पादन सुनिश्चित कर सकते हैं। विनियमों, प्रमाणपत्रों और उपभोक्ता विकल्पों के माध्यम से, हम पशु कल्याण में सुधार जारी रख सकते हैं और एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां हमारी कृषि प्रणालियों में जानवरों के साथ सम्मान और करुणा के साथ व्यवहार किया जाता है।

### भारत में असामान्य पशुधन मृत्यु दर

भारत में असामान्य पशुधन मृत्यु दर कई जटिल कारकों का परिणाम है, जिनमें रोग, पोषण की कमी, जलवायु परिवर्तन, और प्राकृतिक आपदाएँ प्रमुख हैं। संक्रामक बीमारियाँ जैसे मुंहपका-खुरपका (FMD), लंपी स्किन डिज़ीज़, और ब्रुसेल्लोसिस पशुधन के लिए अत्यधिक घातक साबित हो सकती हैं, विशेषकर जब उचित टीकाकरण और उपचार उपलब्ध न हो। पोषण की कमी, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, पशुधन की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करती है, जिससे वे विभिन्न बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। पिछले पांच सालों में जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न गर्मी, सूखा, और बाढ़ जैसी परिस्थितियाँ भी पशुधन के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। इसके अलावा, परजीवी संक्रमण, विषाक्त पौधों या दूषित पानी से अचानक विषाक्तता, और आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं की कमी भी मृत्यु दर बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

### टेबल:1. भारत में असामान्य पशुधन मृत्यु दर

वर्ष	मुख्य कारण	प्रभावित राज्य	पशुधन मृत्यु दर
2019	गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी)	राजस्थान और गुजरात	60,000+
2020	गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी), खराब मौसम	उत्तर प्रदेश और राजस्थान	70,000
2021	गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी), अत्यधिक गर्म हवा	पंजाब और हरियाणा	80,000
2022	गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी), अत्यधिक वर्षा	राजस्थान और हिमांचल प्रदेश	100,000+
2023	गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी), अत्यधिक गर्म हवा	राजस्थान और उत्तर प्रदेश	100,000+

### पशु कल्याण की अवधारणा

पशु कल्याण प्रथाएँ, पशुओं के हितार्थ की अभिव्यक्ति में सहयोग करती है, जिसमें पशुओं की बीमारी, चोट, दर्द, परेशानी एवं अन्य नकारात्मक स्थितियों की रोकथाम और उपचार की परिकल्पना शामिल है साथ ही साथ यह पशुओं के आहार सम्बन्धी प्रथाओं को भी संजोये हुए है जिससे पशु प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल अपना जीवन जी सके | पशु कल्याण प्रथाओं के अंगीकार से अनेकों लाभ हैं जैसे कि दुग्ध उत्पादन एवं गुणवत्ता में वृद्धि, पशु स्वास्थ्य में वृद्धि, जन समूहों के खाद्यान्न, पोषक तत्वों, आजीविका, एवं स्वास्थ्य में वृद्धि आदि. इस सम्बन्ध में खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ. ऐ. ओ.) ने 2011 में पशु कल्याण पर एक मार्गदर्शिका विकसित की है जिसका औचित्य यह है कि पशु पालकों द्वारा पशु कल्याण प्रथाओं को अंगीकार करने में सहायता मिले | इस मार्गदर्शिका में पशु कल्याण के पाँच मूलभूत स्वतंत्रता को सूचीबद्ध किया गया है | जो निम्न है,

1. भूख, प्यास और कुपोषण की स्वतंत्रता
2. असुविधा की स्वतंत्रता

3. दर्द, चोट और बीमारी की स्वतंत्रता

4. भय और संकट की स्वतंत्रता

5. पशु व्यवहार के सामान्य स्वरूप में संलग्नता

पशु की अच्छी दशा पशु कल्याणकारी प्रथाओं को इंगित करती हैं, यह पशु के भौतिक, व्यवहारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी जरूतों को पूरा करती है। अगर पशु अपने सामान्य वातावरण में जी रहा हो और अकारण उसको चोट या दर्द सहना न पड़े तो उससे प्राप्त होने वाला पारितोषिक अतुलनीय हो जाता है।

#### पशु कल्याण प्रथाओं के लाभ

पशु कल्याण, पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता के बीच मजबूत संबंधों को देखते हुए, पशु कल्याण को बढ़ावा देने के लिए निर्धारित की गई प्रथाओं को अमल में लाना अति आवश्यक है जिसका सीधा असर आपको दुग्ध उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता में देखने को मिलता है।

- दर्द, भय और शारीरिक तनाव को दूर कर संचालन विधियों को अमल में लाकर विकास और प्रजनन में सुधार किया जा सकता है।
- पशुओं को उपयुक्त भोजन और पर्याप्त पानी प्रदान करना स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखने में मदद करता है।
- पशुओं को सामान्य वातावरण प्रदान कर असामान्य और हानिकारक व्यवहार की घटनाओं को कम करा जा सकता है।
- सुरक्षित, आरामदायक वातावरण एवं चोटों को रोकना पशु की उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकता है।
- पर्याप्त जगह प्रदान करना भीड़ से संबंधित मौतों और उत्पादन को रोक सकता है।
- जानवरों के लोडिंग और परिवहन में सुधार से चोट लगने और उससे होने वाले हानि से बचा जा सकता है।
- वध प्रक्रिया में उपयुक्त तकनीकों और उपकरणों का उपयोग कर दर्द, भय और परेशानी को कम करा जा सकता है जिससे मांस की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- पशु पालकों द्वारा अच्छी तरह देखभाल करने से बीमारियों से बचना, उत्पादन बढ़ना एवं व्यवहार संबंधी समस्याओं का निवारण हो सकता है।

#### पशु कल्याण का टिकाऊ कृषि के साथ आपसी सम्बन्ध

पशु कल्याण स्थायी कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसमें पशुओं की भलाई, पर्यावरण संरक्षण, कृषि उत्पादकता, जैव विविधता और सामाजिक-आर्थिक स्थिरता के बीच जटिल संबंधों पर आधारित है। आधुनिक कृषि में, जहां पारंपरिक और औद्योगिक प्रणालियों के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है, पशु कल्याण एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इस लेख में हम विस्तार से समझेंगे कि पशु कल्याण स्थायी कृषि में कैसे योगदान देता है और इसके विभिन्न आयाम क्या हैं।

#### पशु कल्याण की परिभाषा और महत्व

पशु कल्याण का तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जिनमें पशु अपने प्राकृतिक व्यवहार को व्यक्त कर सकें, बिना दर्द या तनाव के जीवन जी सकें। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि पशुओं को उचित पोषण, स्वच्छ पानी, पर्याप्त जगह, और स्वास्थ्य सेवाएं मिलें। पशु कल्याण न केवल पशुओं की भलाई के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि यह किसानों, उपभोक्ताओं और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए भी लाभकारी है। इसका सीधा प्रभाव कृषि की उत्पादकता, मिट्टी की उर्वरता, जलवायु परिवर्तन की रोकथाम, और जैव विविधता संरक्षण पर पड़ता है।

## स्थायी कृषि की अवधारणा

स्थायी कृषि एक ऐसी प्रणाली है जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए खाद्य सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता, और पर्यावरणीय संतुलन सुनिश्चित करती है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना है। इसमें पौधों, जानवरों और मानव के बीच समग्र संबंधों को ध्यान में रखा जाता है। स्थायी कृषि का उद्देश्य केवल अधिक उत्पादन करना नहीं है, बल्कि इसे इस तरह करना है कि पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे और सामाजिक संतुलन बना रहे।

## पशु कल्याण और स्थायी कृषि के बीच संबंध

**1. पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार:** पशुओं का सही देखभाल और कल्याण उनकी उत्पादकता में सीधा योगदान देता है। स्वस्थ पशु अधिक दूध, मांस, ऊन आदि का उत्पादन करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक गाय को उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार आहार, पानी, और रहने की जगह दी जाए, तो वह अधिक और गुणवत्तापूर्ण दूध का उत्पादन करेगी। इसी तरह, मांस उत्पादन में भी बेहतर परिणाम देखे जाते हैं। जब पशुओं का स्वास्थ्य अच्छा होता है, तो उनमें बीमारियों का खतरा कम हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप एंटीबायोटिक्स और अन्य दवाओं का उपयोग भी कम होता है। इससे न केवल पशुओं की भलाई होती है बल्कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध की समस्या से भी बचा जा सकता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा है।

**2. पर्यावरणीय प्रभाव और पशु कल्याण:** पशु कल्याण का पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब पशुओं को प्राकृतिक तरीके से पाला जाता है, तो इसका मतलब है कि वे अधिक स्थान पर रहते हैं, अधिक प्राकृतिक आहार खाते हैं, और अपने मल-मूत्र को प्राकृतिक रूप से छोड़ते हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं होता। उदाहरण के लिए, खुली चराई (free-range grazing) में पशु प्राकृतिक रूप से भोजन ढूंढते हैं और जमीन में पोषक तत्वों का पुनर्नवीनीकरण होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। इसके विपरीत, जब पशुओं को घने और अप्राकृतिक परिस्थितियों में पाला जाता है, तो उनके मल-मूत्र का सही प्रबंधन नहीं हो पाता, जिससे जल और मिट्टी का प्रदूषण होता है। इससे स्थानीय पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे जल स्रोतों में नाइट्रोजन और फॉस्फोरस की अत्यधिक मात्रा, जिससे जल-जीवों को नुकसान होता है।

**3. पुनर्योजी कृषि और पशु कल्याण:** पुनर्योजी कृषि (Regenerative Agriculture) एक ऐसी प्रणाली है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का पुनः सृजन किया जाता है। इसमें मिट्टी की उर्वरता बढ़ाना, जल संरक्षण, और जैव विविधता को बढ़ावा देना शामिल है। पशुओं की भूमिका इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है, खासकर चराई की सही प्रबंधन के माध्यम से। सही तरीके से की गई चराई से मिट्टी में जैविक पदार्थ (organic matter) की मात्रा बढ़ती है, जिससे उसकी संरचना और उर्वरता में सुधार होता है। इसके अलावा, पशुओं द्वारा छोड़े गए मल से प्राकृतिक रूप से उर्वरक मिलता है, जो पौधों के विकास में मदद करता है। इस प्रकार, पशु कल्याण को बढ़ावा देने से पुनर्योजी कृषि की स्थिरता में भी मदद मिलती है।

**4. जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार:** पशु कल्याण के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता को बनाए रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब पशुओं को प्राकृतिक चराई के माध्यम से पाला जाता है, तो यह घास के मैदानों को बनाए रखने और जैव विविधता को बढ़ाने में मदद करता है। चराई के माध्यम से खरपतवार नियंत्रण भी होता है, जिससे खेतों में हानिकारक पौधों की संख्या



कम होती है। इसके अलावा, ऐसे खेत जो पशु कल्याण पर ध्यान देते हैं, वे कीटनाशकों और रसायनों का कम उपयोग करते हैं, जो वन्यजीवों और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। इससे पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है और स्थानीय वन्यजीवों के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाता है।

**5. मानव स्वास्थ्य और पशु कल्याण:** पशु कल्याण का मानव स्वास्थ्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ और खुशहाल पशु मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, उन मवेशियों का मांस और दूध जो प्राकृतिक आहार पर पाले जाते हैं, उनमें वसा और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है और वे मानव स्वास्थ्य के लिए बेहतर होते हैं। इसके अलावा, जब पशुओं को एंटीबायोटिक्स और हार्मोन से मुक्त रखा जाता है, तो इसका सीधा असर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है। प्राकृतिक रूप से पाले गए पशुओं से मिलने वाले उत्पाद अधिक स्वास्थ्यप्रद होते हैं, जो मानव शरीर में एंटीबायोटिक प्रतिरोध और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने में मदद करते हैं।

**6. सामाजिक-आर्थिक स्थिरता और पशु कल्याण:** स्थायी कृषि केवल पर्यावरण और उत्पादकता के बारे में नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक स्थिरता से भी जुड़ी हुई है। पशु कल्याण सामाजिक जिम्मेदारी को भी प्रोत्साहित करता है। इससे किसानों को अपनी आजीविका में सुधार करने का मौका मिलता है, क्योंकि उपभोक्ता भी अब उन उत्पादों की मांग कर रहे हैं जो नैतिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हैं। पशु कल्याण पर आधारित खेती से किसानों को प्रीमियम दाम मिल सकते हैं, जो उनकी आर्थिक स्थिरता में मदद करता है। साथ ही, यह श्रमिकों के लिए बेहतर कामकाजी परिस्थितियां भी प्रदान करता है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होता है।

**स्थायी कृषि में पशु कल्याण को बढ़ावा देने के उपाय**

**1. नीति और प्रमाणन:** सरकारें और गैर-सरकारी संगठन अब ऐसे प्रमाणन (certifications) और मानकों को बढ़ावा दे रहे हैं जो पशु कल्याण और स्थायी कृषि के लिए आवश्यक हैं। जैविक खेती, ह्यूमेन सर्टिफाइड, और अन्य प्रमाणन किसानों को नैतिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ खेती करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसे प्रमाणन उपभोक्ताओं के लिए भी एक संकेत होते हैं कि उत्पाद सुरक्षित, नैतिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हैं।

**2. शिक्षा और जागरूकता:** किसानों को पशु कल्याण के लाभों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है। सरकारों और संगठनों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से किसानों को यह समझाया जा सकता है कि पशु कल्याण केवल नैतिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी कृषि पद्धतियों और आर्थिक स्थिति के लिए भी फायदेमंद है।

**3. प्रौद्योगिकी और नवाचार:** नई तकनीकों और नवाचारों के माध्यम से पशु कल्याण को बेहतर बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, स्मार्ट सेंसर और अन्य डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके पशुओं की सेहत और गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है, जिससे समय पर देखभाल की जा सके।

**निष्कर्ष**

पशु कल्याण और टिकाऊ कृषि के बीच एक गहरा और आवश्यक संबंध है। पशुओं की देखभाल और उनके कल्याण को प्राथमिकता देने से न केवल उनकी भलाई सुनिश्चित होती है, बल्कि यह कृषि उत्पादकता, पर्यावरण संरक्षण, और मानव स्वास्थ्य में भी सुधार करता है। स्वस्थ और खुशहाल पशु अधिक उत्पादक होते हैं, जिससे किसानों को आर्थिक लाभ होता है। साथ ही, यह मिट्टी की उर्वरता, जल संरक्षण, और जैव विविधता में सुधार करने में मदद करता है, जिससे दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित होती है।

टिकाऊ कृषि में पशु कल्याण की प्रमुख भूमिका है, क्योंकि यह पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है और स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य और आजीविका को बेहतर बनाता है। पशु कल्याण पर आधारित खेती न केवल आर्थिक रूप से फायदेमंद होती है, बल्कि यह सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता का भी प्रतीक है। इसलिए, पशु कल्याण को टिकाऊ कृषि के अभिन्न अंग के रूप में अपनाना एक अनिवार्य कदम है, जो कृषि को दीर्घकालिक रूप से लाभकारी, पर्यावरण के अनुकूल, और नैतिक रूप से सही दिशा में आगे बढ़ाता है।